ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 5, May 2022

महिला सशक्तिकरण विकास का अध्ययन

चांदनी मिश्रा

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश: प्राचीन काल में भारतीय नारी को उच्च स्थान प्राप्त था। बाद में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में गिरावट आने लगी उसे परतंत्र व निर्बल बना दिया गया। महिलाओं में उद्यमिता का विकास हो वोसमाज में आगे बढ़े तथा महिलाएं सशक्त हो इसके लिए यह जरूरी है कि उनमें आर्थिक चेतना एवं उनके प्रति जागरूकता हो तभी वह एक सफल उद्यमी के रूप में सामने आ सकती हैं। महिला सशक्तिकरण के विकास से महिलाओं में आर्थिक निर्भरता आएगी।

मुख्य शब्द: रीवा जिला, महिला सशक्तिकरण, विकास नीति, उद्योग कार्यक्रम

प्रस्तावना:- नारी जिसके बारे में मनुस्मृति में विदित है-

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमंते देवता"

संसार रूपी गाड़ी के दो पहियों में से एक नारी जिसके बिना मानव जीवन की कल्पना तक नहीं की जा सकती है समाज के हित के लिए समय-समय पर नारी अपने विभिन्न रूपों से मानव जीवन को सजाती आई है कभी पिता के लिए एक आदर्श बेटी बनकर तो कभी सीता तथा सावित्री जैसी पत्नी बनकर तो कभी कौशल्या तथा कुंती जैसे माताएं बनकर हमारे जीवन को प्रफुल्लित उन नारियों ने किया है संकट के समय सर उठाकर रानी लक्ष्मीबाई तथा रजिया सुल्तान जैसी वीरांगनाओं ने हमारा नेतृत्व कर मार्गदर्शन किया है

लेकिन समय चक्र कुछ इस तरह से चला कि कुछ विचित्र सोच के पुरुषवादी लोगों ने संसार का मार्गदर्शन करने वाली नारी को चारदीवारी में कैद कर भोग विलास की वस्तु समझ लिया पर्दा प्रथा तथा सती प्रथा जैसीकुरीतियों ने नारी के जीवन के साथ-साथ मानव जीवन को भी गर्तकी तरफ धकेल दियाकुरीति रूपी राक्षस समाज में कुछ इस तरह फैला की नारी के

गर्भ से पैदा हुआ इंसान बेटी को पाप समझने लगा है लगातार हीन भावना से शिकार नारी को अपनी शक्ति तक का एहसास नहीं रहा लेकिन मनुष्य को याद रखना चाहिए

" कर नारी का अपमान क्या रावण बचा है नारी के जीत के सामने तो यम भी झुका है"

इस कहावत को सरोकार करते हुए नारी आज पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने को तैयार है किरण बेदी मदर टेरेसा इंदिरा गांधी सरोजिनी नायडू सुनीता विलियम कल्पना चावला तथा गीता फोगाट जैसी महिलाओं ने राजनीति से लेकर खेल पृथ्वी से लेकर अंतरिक्ष तक अपनी महत्वता को सिद्ध किया है।

शोध क्षेत्र से संबंधित पूर्व में किए गए शोधों के संक्षिप्त समीक्षा:-

1.**डी.क्रूज**, **निर्मला**,**करुणा** **(2003)**ने केरल की महिला उद्यमियों की प्रमुख बाधाओं का पारिवारिक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया। अध्ययन से निष्कर्ष दिया कि यह महिलाएं किसी आकांक्षा से उद्यमिता के क्षेत्र में प्रवेश नहीं की हैं वरण पारिवारिक आय में सहयोग हेतु अन्य किसी विकल्प के अभाव में इन्होंने उद्यमिता को स्वीकार किया है साथ ही अधिकांश महिलाओं ने सुरक्षित नियमित वेतन वाले कार्य से असफल होने के पश्चात ही व्यवसाय को आरंभ किया है अध्ययन से यह निष्कर्ष दिया कि इन महिला उद्यमियों की मुख्य समस्या कच्चे माल की उपलब्धि अधिक समय तक घर से दूर रहना देर समय तक बैठक में उपस्थित होना, पारिवारिक समस्याओं की जिम्मेदारी का वहन आदि रहे हैं।

2 **बीना एवं सुषमा (2003)**ने आंध्र प्रदेश की 30 महिला उद्यमियों का अध्ययन 2003 में किया और पाया कि यह महिलाएं आय प्राप्त एवं परिवार के सहयोग के लिए उद्यम प्रारंभ करती है। यह महिलाएं सब्जी व फूलों की बिक्री के व्यवसाय से संबंधित थी इस व्यवसाय में कम कुशलता किंतु अधिक शारीरिक परिश्रम की आवश्यकता होती है।

3 **मोथा कृष्णबेनी (2004)**ने भारत के ग्रामीण क्षेत्रों मेंमहिला उद्यमिता का अध्ययन किया और पाया कि अधिकांश महिलाएं अपने उद्यम का संचालन कुशलता पूर्वक कर रही हैं एवं वे

निम्न सामाजिक आर्थिक समूह की हैं तथा साथ ही निष्कर्ष दिया कि जो महिलाएं परिवार के सहयोग प्राप्त करती है वह अधिक प्रभावी रूप से उद्यम का संचालन करती हैं भारत में ग्रामीण क्षेत्र में महिलाएं पारिवारिक आय में वृद्धि आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति एवं सरकारी नौकरी ना मिल पाने के कारण उद्यमिता के क्षेत्र में प्रवेश करती हैं।

उद्देश्य: महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य निम्नलिखित है

1. रीवा जिले में महिलाओं की उद्योगों में स्थित का अध्ययन करना।
2. महिला उद्यमियों द्वारा लघु उद्योगों के विकास में भागीदारी का अध्ययन करना।
3. यह ज्ञात करना कि महिला उद्यमिता के क्षेत्र में शासकीय एवं अशासकीय संगठनों की ओर से कौन-कौन सी योजनाएं एवं कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।
4. राज्य सरकार द्वारा महिला उद्यमियों को दिए जाने वाले सूक्ष्म वित्तीय सहायता का अध्ययन करना।
5. महिला सशक्तिकरण के विकास में बाधक विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करना।
6. महिला सशक्तिकरण का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाना।
7. महिला सशक्तिकरण विकास समस्याओं के निराकरण हेतु आवश्यक उपाय खोजना।

शोध क्षेत्र का अध्ययन:

किसी भी सामाजिक शोध कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व शोधार्थी को अपने शोध कार्य का क्षेत्र निर्धारण करना आवश्यक है अध्ययन या शोध कार्य का क्षेत्र निर्धारण करते समय विषय की महत्वता एवं उपलब्ध संसाधनों के आधार पर शोधार्थी को निर्णय लेना होता है शोधार्थी नेमध्य प्रदेश में स्थित रीवा जिले के अध्ययनको चुनाहै रीवा क्षेत्र कृषि और उससे संबंधित उद्योग कार्य पर निर्भर है।

घरेलू उद्योग, लघु उद्योग महिलाओं के लिए प्रमुख हैं, जो आर्थिक आधार भी हैं सूक्ष्म वित्त की सहायता से इस प्रकार के उद्योग आसानी से आरंभ किए जा सकते हैं।एवं उसकी

ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 5, May 2022

सहायता से महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनने में सहायता मिलती है इसके अलावा महिलाओं की पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार होता है महिला उद्यमिता को बढ़ावा मिलता है।

शोध के लिए रीवा जिले को अध्ययन क्षेत्र बनाने का प्रमुख कारण रीवा जिले में महिला उद्यमिता विकास का पिछड़ापन है एवं सूक्ष्म वित्तीय संस्थाओं के प्रति जागरूकता का अभाव है इस विषय में संबंधित जानकारियां एवं विभिन्नसमंकोकोपरिशुद्ध रूप से प्राप्त करके इनके साथ ही शुद्ध निष्पक्ष तथा निष्पादित विषय सामग्री से प्रभावी निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। उपयुक्त समस्त बातों को ध्यान रखकर शोध का क्षेत्र संपूर्ण रीवा जिला निर्धारित किया गया है।

शोध प्रविधि:

तथ्यों एवं समको के संकलन सामाजिक शोध की प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण कदम है क्योंकि इसी आधार पर विभिन्नघटनाओंकेसह-संबंधों को समझना संभव होता है, इस दृष्टिकोण से शोध सामग्री का संकलन जितने निष्पक्ष एवं व्यवस्थित से किया जाता है शोध द्वारा प्राप्त परिणाम भी उतने ही शुद्ध एवं व्यावहारिक बन जाते हैं तथ्य एवं समंक संकलन संख्यिकी अनुसंधान की आधारशिला एवं विषय वस्तु है।इससे पूर्व निर्धारित उद्देश्य के लिए एवं व्यवस्थित ढंग से संग्रहण किया जाता है इन आंकड़ों का सांख्यिकी कीविभिन्न नीतियों द्वारा विश्लेषण करके कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जाते हैं वास्तविकता में तथ्य ही वह कच्चा माल है जिसकी सहायता से अध्ययन को एक विशेष स्वरूप प्राप्त हो सकता है।तथ्यों के संकलन में निम्नलिखित विधियां अपनाई गई हैं।

क. प्राथमिक समंक के संकलन की निम्नलिखित रीतियाहैं-

1. प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अवलोकन
2. साक्षात्कार
3. प्रश्नावली

4. अनुसूचियां भरना

ख. द्वितीयक समक संकलन की नीतियां

1. प्रकाशित स्रोत
2. अप्रकाशित स्रोत

शोध कार्य का निष्कर्ष:

शोध द्वारा विषय और उसके निष्कर्ष का गहनता और सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाता है। कोई भी शोध कार्य तभी सफल माना जाता है जब संबंधित विषय में शोध कार्य का वास्तविक एवं सत्य परिणाम सामने आए तथा शोध कार्य द्वारा प्राप्त परिणाम सार्थक सिद्ध हो जाए। शोध कार्य के परिणाम स्वरूप महिला सशक्तिकरण विकास योजनाओं का सही निरीक्षण एवं आंकलन हो पाएगा महिला सशक्तिकरण विकास से महिलाओं की आर्थिक विकास से जुड़ी विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी योजनाओं का वर्णन व उससे महिला सशक्तिकरण के विकास का योगदान स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आएगा और सबसे महत्वपूर्ण यह भी सिद्ध हो पाएगा कि महिला सशक्तिकरण योजना किस प्रकार से अर्थव्यवस्था पर प्रभाव डाल रही हैं।

संदर्भ सूची:-

[1]. डॉ आर एन त्रिवेदी“रिसर्च मेथाडोलॉजी”।

[2]. के प्रसाद लोकेश “अनुसंधान पद्धति शास्त्र”(क्या क्यों और कैसे) वर्ष 2008,कांथेरीबुक्स नई दिल्ली, 110002।

[3]. उद्योग व्यापार केंद्र रीवा 2017 ।

[4]. औद्योगिक मार्गदर्शिका- जिला उद्योग केंद्र वाराणसी ।

[5]. स्वरोजगार मार्गदर्शिका द्वितीय संस्करण उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश 60 जेल रोड जहांगीराबाद भोपाल 1999 ।